

**छटकना** अ.क्रि. (देश.) 1. किसी वस्तु का तेजी से निकल जाना, हाथ से सरक जाना 2. दूर-दूर रहना, अलग-अलग फिरना जैसे- वह कुछ दिन से छिटकता फिर रहा है 3. वश में से निकल जाना, बहक जाना, दाँव से निकल जाना, हथ्ये न चढ़ना, हाथ न आना जैसे- उसे दिलासा देते रहना अन्यथा वह छटक जाएगा 4. कूदना, उछलना।

**छटका** पुं. (देश.) मछलियाँ पकड़ने के लिए दो खेतों के बीच की मेड़ पर बनाया हुआ गड़ढा।

**छटकाना** अ.क्रि. (देश.) किसी वस्तु को पकड़ से निकल जाने देना स.क्रि. 1. झटका देकर किसी की पकड़ से छुड़ाना 2. खोलना, मुक्त करना, छोड़ देना 3. बंधन को जोर से दूर कर देना।

**छटना** अ.क्रि. (देश.) दे. छँटना।

**छटपट** पुं. (देश.) छटपटाने की क्रिया या भाव वि. चंचल, चपल, नटखट, तेज, फुर्तीला।

**छटपटाना** अ.क्रि. (देश.) व्याकुल होना, तड़पना, किसी वस्तु के लिए आतुर होना जैसे- बच्चा माँ के पास जाने के लिए छपटपटा रहा है।

**छटपटी** स्त्री. (देश.) 1. घबराहट, व्याकुलता, बेचैनी, अधीरता 2. गहरी उत्कंठा, किसी वस्तु के लिए आतुरता।

**छटाँक** स्त्री. (देश.) 1. एक सेर का सोलहवाँ भाग, पाव भर का चौथा हिस्सा।

**छटा** स्त्री. (तद्.) 1. शोभा, छवि, दीप्ति, झलक, प्रभा, सौंदर्य 2. बिजली 3. परंपरा, अविच्छिन्न शृंखला, लड़ी 4. ढेर, पुँज, राशि, संघात।

**छटैन** वि. (देश.) 1. छँटा हुआ 2. चालाक।

**छठ** स्त्री. (तद्.) चांद्र मास के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की छठी तिथि, कार्तिक शुक्ला षष्ठी को होने वाला एक व्रत या पर्व।

**छठा** वि. (तद्.) जो संख्या के क्रम में पाँच के बाद हो।

**छठी** स्त्री. (तद्.) 1. बच्चे के जन्म से छठे दिन का पूजा उत्सव मुहा. छठी का दूध निकलना-

कठिन श्रम करना, भारी संकट पड़ना; छठी का दूध याद आना- घोर संकट में पड़ना, कठिन परिश्रम करना 2. भाग्य, नियति, तकदीर 3. एक देवी जिसकी पूजा षष्ठी तिथि को होती है मुहा. छठी का राजा- पुस्तैनी अमीर, जन्म का दरिद्र (व्यंग्य में); छठी में न पड़ना- भाग्य में न होना।

**छड़** स्त्री. (तद्.) धातु या लकड़ी का लंबा गोल पतला डंडा, लोहे की छड़।

**छड़ना** स.क्रि. (देश.) 1. छँटना 2. छोड़ना।

**छड़ा** पुं. (देश.) 1. चाँदी के तार का बना चूड़ी जैसा गहना जो पाँव में पहना जाता है 2. मोतियों की लड़ियों का गुच्छा वि. अकेला, एकाकी, जिसका विवाह न हुआ हो ऐसा युवक, कुँवारा।

**छड़िया** पुं. (देश.) छड़ी वाला, दंडधारी, दरबान, द्वारपाल।

**छड़ी** स्त्री. (तद्.) 1. सीधी पतली लकड़ी, पतली लाठी जो चलने में सहारा हो 2. पीरों के मजार पर चढ़ाने की झंडी 3. गोखरू, चुटकी आदि की सीधी टँकाई वि. अकेली, अविवाहिता स्त्री मुहा. छड़ी सवारी- बिना किसी साथी के, अकेले।

**छड़ीदार** वि. (देश.) 1. छड़ी वाला 2. लकीरदार पुं. चोबदार, द्वारपाल, रक्षक।

**छड़ीबरदार** पुं. (देश.) बड़े आदमियों की सवारी के साथ सोने-चाँदी की छड़ी लिए हुए चलने वाला, सेवक, चोबदार।

**छत** स्त्री. (तद्.) 1. घर की दीवारों की ऊपर चूना, कंकड़ आदि डालकर पाटा गया फर्श, पाटन 2. घर के ऊपर का खुला हुआ कोठा जैसे- गर्मियों में लोग खुली छत पर सोते हैं।

**छतनार** वि. (देश.) छाते की तरह दूर तक फैला हुआ छायादार पेड़ जिसकी डालियाँ या टहनियाँ दूर तक फैली हो, घना पेड़।

**छतरी** स्त्री. (तद्.) 1. वर्षा या धूप से बचने के लिए बनाया हुआ कपड़े का आच्छादन, छाता 2. पत्तों का बना हुआ छाता 3. किसी की चिता या समाधि के ऊपर स्मारक के रूप में बनाया गया